Original Article
ISSN(Online): 2584-0983
https://shikshasamvad.com/

Shiksha Samvad
International Open Access, Peer Reviewed & Refereed Journal
© Shiksha Samvad|Volume-04| Issue-01| September- 2026
DOI: - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.24

अनुसंधान की उपयोगिता: ज्ञान-सृजन, सामाजिक विकास, शिक्षा, प्रशासन एवं समाज सुधार में इसकी भूमिका और महत्त्व

कुमार गंगेश गुंजन

सहायक प्राचार्य, विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग , एच०पी०एस० कॉलेज निर्मली , बी० एन० एम० यू० मधेपुरा

Email: Kumargangeshgunjan5243@gmail.com

सारांश

अनुसंधान ज्ञान-विस्तार, समस्या-समाधान तथा सामाजिक विकास की एक वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध प्रक्रिया है। प्रस्तुत लेख में अनुसंधान, विशेषतः सामाजिक अनुसंधान, की प्रकृति, विशेषताओं और उपयोगिता का विवेचन किया गया है। अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य नवीन ज्ञान की प्राप्ति, उपलब्ध तथ्यों एवं सिद्धांतों का पुनः परीक्षण, छिपे हुए सत्यों की खोज तथा समस्याओं का तार्किक समाधान प्रस्तुत करना है। सामाजिक अनुसंधान समाज की संरचना, सामाजिक समस्याओं, मानवीय आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग, कार्य-कारण संबंधों की खोज, प्रकल्पनाओं की जाँच, सिद्धांतों के पुनः परीक्षण एवं नवीन प्रविधियों के विकास में सहायक होता है। विकासशील समाजों में सामाजिक नियोजन, कल्याणकारी कार्यक्रमों, प्रशासन और समाज-सुधार के लिए विश्वसनीय जानकारी उपलब्ध कराने में इसकी विशेष उपयोगिता है। अनुसंधान अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िगत धारणाओं को कम करते हुए प्रमाणिक ज्ञान को बढ़ाता है तथा सामाजिक जीवन की बेहतर समझ विकसित करता है। इसके आधार पर वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण कर भविष्य की संभावित प्रवृत्तियों का अनुमान भी लगाया जा सकता है। इस प्रकार अनुसंधान सैद्धान्तिक ज्ञान के विस्तार के साथ-साथ व्यावहारिक समस्याओं के समाधान और समाज के संतुलित एवं योजनाबद्ध विकास का एक आवश्यक आधार है।

कुंजी शब्द: *अनुसंधान, सामाजिक अनुसंधान, नवीन ज्ञान, वैज्ञानिक विधि, सामाजिक नियोजन, समाज सुधार, समस्या समाधान*

अनुसंधान की उपयोगिता किसी भी समाज, विज्ञान, शिक्षा तथा राष्ट्र के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है | यह नए ज्ञान की खोज करने तथा पुरानी जानकारियों को बेहतर बनाने की एक क्रमिक प्रक्रियाँ है | अनुसंधान (Research) का अभिप्राय – किसी भी क्षेत्र में नए ज्ञान की खोज करना पुराने तथ्यों व सिद्धांतों का पुनः परीक्षण करना और विधिवत गवेषणा (जाँच- पड़ताल) करना होता है |

इसे अंग्रेजी में 'रिसर्च' तथा सामान्य बोलचाल में 'शोध' कहा जाता हँ | जिसका मुख्य उद्देश्य – नया ज्ञान प्राप्त करना . छिपे हुए सत्यों की खोज करना एवम् किसी समस्या का तार्किक समाधान खोजना है |

इसके अलावे सत्य की पहचान, समस्या का समाधान, घटनाओं का सटीक वर्णन संबंधों की जाँच करना शामिल होता है |

रेडमैंन एवम् मोरी महोदय के अनुसार – "नवीन – ज्ञान की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला व्यक्तिगत प्रयास ही 'अनुसंधान' कहलाता है |

पी.एम.... के अनुसार – "अनुसंधान किसी समस्याओं के प्रति किया गया एक प्रकार का विशेष प्रयास होता है"|

G.M.Fisher के मतानुसार – "अनुसंधान किसी भी जटिल – से – जटिल समस्याओं का निराकरण में एक प्रेरक की भूमिका निभाती है"| जिसकी पुष्टि उनकी पुस्तक 'डिक्सनरी ऑफ़ सोथियोलॉजी' से पूर्णतः स्पष्ट हो जाती है |

पिछड़े हुए देशों, अर्द्ध विकसीत देशों या विकाशशील देशों में सामाजिक नियोजन (Social Planning) का इस दृष्टि से महत्व पाया जाता हैं कि, उन्हें विकास के पथ पर आगे बढ़ना हैं, अपने यहाँ सुख - समृद्धि लाना हैं | इसके लिए उन्हें अपने समाज की 'सामाजिक संरवना' को भली -भाँति समझना होगा, सामाजिक समस्याओं को जानना होगा, लोगों की इच्छाओं आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी होगी | यह सब कुछ 'सामाजिक अनुसन्धान' की सहायता से ही किया जा सकता हैं। साथ ही साथ उसे विभिन्न व्याधिकीय समस्याओं से छूटकारा प्राप्त करना होगा, सामाजिक कुप्रथाओं को रोकथाम करनी पड़ेगी | यह सब कुछ करने के लिए "सामाजिक अनुसंधान" का सहारा लेना अत्यंत आवश्यक होगा | "सामाजिक अनुसंधान" वास्तव में सामाज विज्ञानों का ही आधार हैं | आज विभिन विज्ञानों के लिए अधिकाधिक प्रमाणिक सामग्री सामाजिक अनुसंधान के द्वारा ही प्राप्त होगी | अनुसंधान द्वारा प्राप्त ज्ञान समाज एवम् सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में हमारी जानकारी में उत्तरोत्तर वृद्धि करता हैं। फलस्वरूप सामाजिक क्रियाओं को समझने में सहायता प्रदान करती हैं। इसके साथ ही नवीन ज्ञान की संभावना बढ़ती जाती हैं। जैसे-जैसे ज्ञान में वृद्धि होती हैं, उसके साथ - ही - साथ अनेक अंधविश्वासों था रूढ़िगत विचारों से हमें छूटकारा प्राप्त होता जाता हैं। - उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि "सामाजिक अनुसंधान" सैद्धान्तिक ज्ञान में वृद्धि करने के साथ - साथ माननीय समस्याओं के हल खोजने में भी अत्यंत ही आवश्यक होता हैं।

"सामाजिक अनुसंधान" की कुछ अपने मुख्य विशेषतायेंभी होती हैं।

जैसे :-

- वैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्ययन
- नवीन ज्ञानों का सृजन
- कार्य - कारण संबंधों की खोज
- सिद्धांतों की पुर्नपरीक्षा
- प्रकल्पना की जाँच
- नए सिद्धांतों का निर्माण
- सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक समस्याओं का हल करना
- नवीन प्रविधियों का विकास

इया अनुसंधान की एक विशेषता यह है कि इसका अध्ययन - क्षेत्र काफी व्यापक होता हैं। "सामाजिक अनुसंधान" के अध्ययन क्षेत्र में सम्पूर्ण सामाजिक जीवन तथा उससे सम्बद्ध सामाजिक प्रक्रियायें आ जाता हैं। इसमें केवल नवीन अध्ययन विषय तक ही सीमित नहीं रहता हैं, बल्कि ऐसे विषयों का भी अध्ययन चुना जाता या किया जाता हैं जिनके सम्बन्ध में आपले शोध – कार्य हो चूका हैं।

वर्तमान में वैज्ञानिक खोजों के आधार पर यह स्पष्ट हो चूका हैं कि कोई भी प्रजाती अन्य प्रजातियों की तुलना में शारीरिक एवम् मानसिक रूप से हीन नहीं होता हैं।

सामाजिक अनुसंधान की उपयोगिता

भारत जैसे विकासशील देश में सामाजिक अनुसंधान की विशेष उपयोगिता है, क्योंकि उसे कल्याणकारी धर्म निरपेक्ष एवं समतावादी समाज की दिशा में आगे बढ़ने के लिए अभी बहुत कुछ करता है। विकास याजनाओं को सफलतापूर्वक लागू करता है। 'सामाजिक अनुसन्धान' की उपयोगिता या महत्व को हम निम्न विदुओं के अन्तर्गत इस प्रकार हम व्यक्त कर सकते हैं।

अज्ञानता को दूर करने में सहायक

अज्ञानता अनेक समस्याओं की जननी है। आज अनेक अन्धविश्वासों, भान्न धारणाओं, क्षुद्र स्वार्थी, संकुचित आस्थाओं तथा सामाजिक क्रियाओं की सही जानकारी के अभाव के अनेक समस्याओं से ग्रसित हैं।

नवीन ज्ञान की प्राप्ति में सहायक

मानव सभ्यता का विकास ज्ञान की प्राप्ति पर ही बहुत कुछ आधारित होता है।

हेरिंग (Hearring) महोदय ने ठीक ही कहा है- "अनुसन्धान' का प्रत्यश्न प्रकार्य ज्ञान के मौजूद भंडार में नवीन ज्ञान को जोड़ना है।"

कल्याण कार्यों में सहायक

भारत एक कल्याणकारी राज्य है। यहाँ पिछड़े वर्गो, जनजातीय लोगों, अनुसूचित जातियों, सीमान्त किसानों बन्धुआ मजदूरों आदि की अनेक समस्यायें हैं। इन्हें आर्थिक दृष्टि से रोजगार के समुचित अवसर उपलब्ध कराना है तथा इनकी अज्ञानता को दूर करना है। अतः समाज की मुख्य धारा में समाहित करना है। इस कार्य वास्ते, सामाजिक अनुसनधान को सहारा लेना ही पड़ेगा।

प्रशासन एवं समाज सुधार में उपयोगिता

प्रशासनिक सेवाओं में उच्च पदों पर आसीन अधिकारीयों के लिए 'सामाजिक अनुसन्धान' द्वारा प्राप्त ज्ञान का विशेष उपायोगिता है। समान्ज सुधारक के रूप में अपनी भूमिका प्रभावशील ढंग से उसी समय जिभा सकते हैं, जब उन्हें समाजिक अनुसन्धान द्वारा आवश्यक सामग्री या ज्ञान प्रदान किया जा सके।

भविष्यवाणी करने में सहायक

यह अनुसन्धान ज्ञान की इस रूप विशेष उपयोगिता प्रदान करती है, समझकर जिसके आधार पर वर्त्तमान को समझकर भविष्य के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है, भविष्य का सामाजिक घटनाओं के बारे में बताया जा सकता है। साथ ही साथ उनके साथ सफलतापूर्वक समायोजन और सामाजिक जीवन में संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

सैद्धान्तिक महत्व यह अनुसन्धान वास्तव में रामाज-विज्ञानों का आधार है। आज विभिन्न विज्ञानों के लिए अधिकाधिक प्रमाणिक सामग्री सामाजिक अनुसन्धान के द्वारा प्राप्त होती है।

फलस्वरूप सामाजिक क्रियाओं को रामड़ाने में सहायता पहुँचाती है। साथ ही इसके नवीन ज्ञान की संभावनायें बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे ज्ञात में वृद्धि होती जाती है, वैसे-वेसे अनेक अंधविश्वासें एवं सुदिगत विचारों से छूटकारा प्राप्त होते जाता है।

अनुसंधान का व्यापक महत्व

अनुसंधान केवल तथ्यों को एकत्र करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि उपलब्ध ज्ञान को व्यवस्थित ढंग से समझने, उसकी जाँच करने और उसके आधार पर नई व्याख्याएँ विकसित करने का माध्यम भी है। किसी समाज में जब परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं, तब अनेक नई समस्याएँ सामने आती हैं और पुरानी समस्याएँ नए रूप ग्रहण करती हैं। ऐसी स्थिति में सामान्य अनुभव या अनुमान पर्याप्त नहीं होते। अनुसंधान व्यवस्थित अवलोकन, तथ्य-संग्रह, विश्लेषण और तार्किक निष्कर्ष के माध्यम से अधिक विश्वसनीय समझ विकसित करता है। यही कारण है कि शिक्षा, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, प्रशासन तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान को ज्ञान-विकास का आधार माना जाता है। इसके माध्यम से किसी समस्या के वास्तविक स्वरूप, उसके संभावित कारणों और उससे संबंधित परिस्थितियों को स्पष्ट किया जा सकता है। इस प्रकार अनुसंधान व्यक्ति को केवल जानकारी नहीं देता, बल्कि प्रमाणों के आधार पर सोचने और निर्णय लेने की प्रवृत्ति को भी विकसित करता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में सहायक: अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण योगदान वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ है किसी कथन या धारणा को बिना परीक्षण स्वीकार न करना, बल्कि उसके समर्थन में उपलब्ध तथ्यों और प्रमाणों को देखना। सामाजिक जीवन में

अनेक मान्यताएँ परंपरा, रूढ़ि या अपूर्ण जानकारी के कारण बनी रहती हैं। अनुसंधान ऐसी मान्यताओं की तथ्यात्मक जाँच का अवसर प्रदान करता है। जब किसी विषय पर व्यवस्थित आँकड़े उपलब्ध होते हैं, तब व्यक्ति और समाज दोनों अधिक विवेकपूर्ण निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं। इस दृष्टि से अनुसंधान अंधविश्वास, भ्रांत धारणाओं और पूर्वाग्रहों को कम करने में सहायक होता है। यह प्रश्न पूछने, कारण खोजने, प्रमाणों की तुलना करने और निष्कर्षों की पुनः जाँच करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है। फलतः ज्ञान अधिक वस्तुनिष्ठ, तर्कसंगत और उपयोगी बनता है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की उपयोगिता

शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की भूमिका अत्यंत व्यापक है। शिक्षण की प्रभावशीलता, विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयाँ, पाठ्यक्रम की उपयोगिता, मूल्यांकन की गुणवत्ता, शिक्षक-प्रशिक्षण तथा विद्यालयी वातावरण जैसे अनेक विषयों को अनुसंधान के माध्यम से समझा जा सकता है। किसी शिक्षण विधि के प्रभाव का परीक्षण करने, विद्यार्थियों की उपलब्धि में अंतर के कारणों को पहचानने तथा शैक्षिक योजनाओं के परिणामों का आकलन करने के लिए व्यवस्थित अनुसंधान आवश्यक है। इसी प्रकार नई शिक्षण तकनीकों या नवाचारों को अपनाने से पहले उनके प्रभाव और सीमाओं का अध्ययन किया जा सकता है। अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, प्रशासकों और नीति-निर्माताओं को ऐसे निर्णय लेने में सहायता देते हैं जो वास्तविक आवश्यकताओं के अधिक निकट हों। इस प्रकार शिक्षा में अनुसंधान केवल सैद्धान्तिक ज्ञान को नहीं बढ़ाता, बल्कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और उत्तरदायी बनाने में भी सहायक होता है।

मनोविज्ञान एवं मानव व्यवहार के अध्ययन में उपयोगिता

मानव व्यवहार जटिल और बहुआयामी है। व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ, प्रेरणा, अधिगम, व्यक्तित्व, समायोजन, निर्णय, भावनाएँ तथा सामाजिक व्यवहार अनेक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। मनोवैज्ञानिक अनुसंधान इन व्यवहारों का व्यवस्थित अध्ययन करने में सहायता देता है। अवलोकन, परीक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली और अन्य वैज्ञानिक प्रविधियों के माध्यम से व्यवहार से संबंधित तथ्य एकत्र किए जाते हैं और उनका विश्लेषण किया जाता है। इससे व्यक्ति तथा समूह के व्यवहार के बारे में अधिक स्पष्ट समझ विकसित होती है। शिक्षा, परामर्श, मानसिक स्वास्थ्य, संगठन और सामाजिक जीवन में ऐसी जानकारी उपयोगी हो सकती है। अनुसंधान के द्वारा केवल व्यवहार का वर्णन ही नहीं किया जाता, बल्कि व्यवहार से संबंधित विभिन्न कारकों के बीच संबंधों को भी समझने का प्रयास किया जाता है। इस कारण मनोविज्ञान में सिद्धांत निर्माण और व्यावहारिक अनुप्रयोग दोनों के लिए अनुसंधान का विशेष महत्व है।

सामाजिक समस्याओं की पहचान और समाधान

समाज में गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, असमानता, भेदभाव, सामाजिक कुप्रथाएँ और संसाधनों तक असमान पहुँच जैसी अनेक समस्याएँ विद्यमान रहती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए पहले उनके वास्तविक स्वरूप और कारणों को समझना आवश्यक है। सामाजिक अनुसंधान समस्या से प्रभावित समूहों, स्थानीय परिस्थितियों, उपलब्ध संसाधनों और सामाजिक प्रतिक्रियाओं के संबंध में प्रमाणिक जानकारी प्रदान कर सकता है। इससे यह स्पष्ट किया जा सकता है कि किसी समस्या का प्रभाव किन समूहों पर अधिक है और उसके पीछे कौन-से सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक कारक कार्य कर रहे हैं। ऐसी जानकारी योजनाओं और सुधारात्मक कार्यक्रमों की दिशा निर्धारित करने में सहायक होती है। अनुसंधान के आधार पर किसी कार्यक्रम के क्रियान्वयन के बाद उसके प्रभाव का मूल्यांकन भी किया जा सकता है, जिससे यह जाना जा सके कि अपेक्षित परिवर्तन हुआ या नहीं। इस प्रकार सामाजिक अनुसंधान समस्या की पहचान से लेकर समाधान के मूल्यांकन तक उपयोगी भूमिका निभाता है।

सामाजिक नियोजन और नीति निर्माण में भूमिका

सामाजिक नियोजन का उद्देश्य उपलब्ध संसाधनों का उपयोग समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप करना और विकास की दिशा को अधिक व्यवस्थित बनाना है। इसके लिए जनसंख्या, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक संरचना, आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के बारे में विश्वसनीय

जानकारी आवश्यक होती है। अनुसंधान ऐसी जानकारी उपलब्ध कराने का प्रमुख साधन है। यदि योजनाएँ केवल अनुमान या सामान्य धारणाओं पर आधारित हों, तो उनके वास्तविक आवश्यकताओं से दूर होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत, तथ्य-आधारित अध्ययन प्राथमिकताओं को पहचानने, लक्ष्य समूह निर्धारित करने और योजनाओं के परिणामों का मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं। अनुसंधान नीति-निर्माताओं को यह समझने का अवसर भी देता है कि किसी नीति का प्रभाव विभिन्न सामाजिक समूहों पर किस प्रकार पड़ रहा है। इस प्रकार सामाजिक अनुसंधान नियोजन को अधिक यथार्थपरक, उत्तरदायी और परिणामोन्मुख बनाने में योगदान देता है।

प्रशासनिक निर्णय और कार्यक्रम मूल्यांकन

प्रशासन में अनेक निर्णय ऐसे होते हैं जिनका प्रभाव बड़ी संख्या में लोगों पर पड़ता है। इसलिए निर्णयों के लिए विश्वसनीय और अद्यतन जानकारी का होना आवश्यक है। सामाजिक अनुसंधान प्रशासन को क्षेत्रीय आवश्यकताओं, लाभार्थियों की समस्याओं, सेवाओं की उपलब्धता तथा योजनाओं के क्रियान्वयन से संबंधित तथ्य प्रदान कर सकता है। सर्वेक्षण, क्षेत्र-अध्ययन और मूल्यांकन के माध्यम से यह जाना जा सकता है कि किसी योजना का लाभ अपेक्षित समूह तक पहुँच रहा है या नहीं, किन स्तरों पर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं और सुधार की आवश्यकता कहाँ है। कार्यक्रम मूल्यांकन में अनुसंधान विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि यह उद्देश्यों और वास्तविक उपलब्धियों के बीच तुलना करने का आधार प्रदान करता है। इससे प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और प्रभावशीलता बढ़ाने की दिशा में सहायता मिल सकती है।

सिद्धांत निर्माण और पुनर्परीक्षण

अनुसंधान का सैद्धान्तिक महत्व भी अत्यंत व्यापक है। सामाजिक विज्ञानों में सिद्धांत किसी घटना या व्यवहार को समझने और उसकी व्याख्या करने के लिए अवधारणात्मक आधार प्रदान करते हैं। किंतु कोई भी सिद्धांत अंतिम या अपरिवर्तनीय नहीं माना जाता। बदलती सामाजिक परिस्थितियों, नए तथ्यों और नए अध्ययन के आधार पर सिद्धांतों की पुनः जाँच आवश्यक होती है। अनुसंधान इस पुनर्परीक्षण की प्रक्रिया को संभव बनाता है। यदि नए प्रमाण किसी स्थापित धारणा का समर्थन करते हैं तो उसका आधार मजबूत होता है; यदि प्रमाण भिन्न दिशा में संकेत करते हैं तो संशोधन या नई व्याख्या की आवश्यकता सामने आती है। इसी प्रक्रिया से ज्ञान गतिशील बना रहता है और नए सिद्धांतों के निर्माण की संभावना विकसित होती है। इसलिए अनुसंधान पुराने ज्ञान और नवीन ज्ञान के बीच एक सतत सेतु का कार्य करता है।

भविष्य की प्रवृत्तियों को समझने में योगदान

अनुसंधान भविष्य को निश्चित रूप से बताने का साधन नहीं है, फिर भी वर्तमान और अतीत से प्राप्त व्यवस्थित आँकड़ों के आधार पर संभावित प्रवृत्तियों को समझने में सहायता कर सकता है। जनसंख्या, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक व्यवहार या अन्य सामाजिक संकेतकों में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करके संभावित दिशाओं का अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे अनुमान नियोजन और तैयारी के लिए उपयोगी होते हैं। यदि किसी सामाजिक समस्या में लगातार वृद्धि दिखाई देती है, तो उसके कारणों की पहचान कर समय रहते हस्तक्षेप की योजना बनाई जा सकती है। इसी प्रकार किसी कार्यक्रम के सकारात्मक परिणामों का अध्ययन उसके विस्तार के लिए आधार प्रदान कर सकता है। इस अर्थ में अनुसंधान वर्तमान परिस्थितियों की गहरी समझ के माध्यम से भविष्य के प्रति अधिक सजग और योजनाबद्ध दृष्टिकोण विकसित करता है।

निष्कर्ष

समग्र रूप से अनुसंधान ज्ञान की खोज, सत्यापन, समस्या-समाधान और सामाजिक विकास की एक अनिवार्य प्रक्रिया है। सामाजिक अनुसंधान का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि समाज निरंतर परिवर्तनशील है और उसके साथ समस्याओं, आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं का स्वरूप भी बदलता रहता है। वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग से अनुसंधान सामाजिक वास्तविकताओं को अधिक व्यवस्थित ढंग से समझने में सहायता करता है। यह नवीन ज्ञान के सृजन, सिद्धांतों की पुनर्परीक्षा, सामाजिक समस्याओं की पहचान, योजनाओं के निर्माण, प्रशासनिक निर्णयों,

कल्याणकारी कार्यक्रमों तथा समाज-सुधार में उपयोगी आधार प्रदान करता है। साथ ही यह अज्ञानता, अंधविश्वास और रूढ़िगत विचारों के स्थान पर प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। इसलिए अनुसंधान का महत्व केवल अकादमिक जगत तक सीमित नहीं है; उसका संबंध समाज के व्यावहारिक जीवन और विकास से भी है। प्रमाणिक ज्ञान और विवेकपूर्ण निर्णय के माध्यम से अनुसंधान समाज को अपनी परिस्थितियों को समझने, समस्याओं का समाधान खोजने और योजनाबद्ध विकास की दिशा में आगे बढ़ने में सहायता करता है।

संदर्भ (Reference):-

1). P. Hearing - Research for Public Pollicy. P - 15

2). G.M Fisher - Dictionary of Socilogy. P. 291

3). E.S. BOGARDUS – Sociology. P-543

4). C.A. Moser - Survey Methods in Social - Investigation. P-3

5). Redman And Mori – A book of New Knowledge Trails research. Page – 03

6). P.M.Cook – A research book of Problems Page – 21

Cite the Article:

गुंजन, कुमार गंगेश . (2026). अनुसंधान की उपयोगिता: ज्ञान-सृजन, सामाजिक विकास, शिक्षा, प्रशासन एवं समाज सुधार में इसकी भूमिका और महत्त. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1) 219-224, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 04, Issue 01, September-2026., **DOI:** - https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.24

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.